आईसीएफआरई-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (HFRI) द्वारा आयोजित 25वीं अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक के कार्यवृत

17.09.2024

आईसीएफआरई-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की **25वीं अनुसंधान सलाहकार बैठक** (आरएजी) **17 सितंबर, 2024** को हाइब्रिड मोड (ऑफ-लाइन/ऑन-लाइन) द्वारा आयोजित की गई । आरंभ में **श्रीमती सविता कुमारी बन्याल, मुख्य तकनीकी अधिकारी** ने सभी **आरएजी सदस्यों** का स्वागत किया और आरएजी बैठक के प्रारम्भ और उद्देश्यों से अवगत करवाया। उन्होंने सदस्यों को यह भी बताया कि आईसीएफआरई-एचएफआरआई **के निदेशक (प्रभारी) डॉ. संदीप शर्मा** इस आरएजी बैठक की **अध्यक्षता** करेंगे। उद्घाटन सत्र में, संक्षिप्त परिचय के बाद, अध्यक्ष ने आईसीएफआरई के **सहायक महानिदेशक (अनुसंधान योजना), डॉ. पी.एस. रावत** और सभागार में उपस्थित सभी प्रतिष्ठित **आरएजी सदस्यों** और वर्चुअली जुड़े लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया। उसके बाद, उन्होंने आरएजी बैठक के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि विशेषज्ञ सदस्यों के सुझाव अनुसंधान प्रस्तावों को वैज्ञानिक रूप से सार्थक और अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक उपयोगी बनाकर उन्हें सही दिशा प्रदान करते हैं। इसके मद्देनजर, अध्यक्ष ने आरएजी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे नई परियोजना का गंभीरता से मूल्यांकन करें और नए शोध प्रस्तावों में और सुधार तथा उन्हें बेहतर बनाने के लिए वांछित परिवर्तन/संशोधन करने के लिए अपनी बहुमूल्य टिप्पणियाँ प्रस्तुत करें। इसके अलावा, उन्होंने बताया कि इस बैठक के दौरान विभिन्न विषयों के अंतर्गत **छह नए परियोजना प्रस्ताव** आरएजी के समक्ष प्रस्तुत किए जाने हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मूल्यांकन मानदंडों के बारे में भी बताया कि 80 अंक प्राप्त करने वाली परियोजनाओं को आईसीएफआरई में **अनुसंधान नीति समिति (आरपीसी)** को आगे प्रस्तुत किया जाएगा।

इसके **बाद, डॉ. आर के वर्मा, वैज्ञानिक-जी.** ने संस्थान के बारे में एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी, जो मुख्य रूप से एचएफआरआई के अधिदेश, संगठनात्मक संरचना और वर्तमान अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) गतिविधियों पर केंद्रित थी। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित प्रमुख उपलब्धियों और प्रौद्योगिकियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी भी प्रदान की। इसके बाद, निदेशक प्रभारी और आरएजी के अध्यक्ष ने **डॉ. पी. एस. रावत, एडीजी (आरपी)** को उद्घाटन भाषण के लिए आमंत्रित किया। शुरुआत में, उन्होंने सभी सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया और कहा कि आईसीएफआरई संस्थान स्तर पर आयोजित आरएजी बैठकों की सिफारिशों के आधार पर अनुसंधान परियोजनाओं का चयन करता है। उन्होंने वानिकी क्षेत्र में अनुसंधान की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए प्रस्तावों की सावधानीपूर्वक समीक्षा पर जोर दिया। उन्होंने प्रस्तावित किया कि परियोजना अन्वेषकों (पीआई) को नए शोध प्रस्तावों में प्रस्तावित उद्देश्यों, अनुसंधान अंतराल, सांख्यिकीय डिजाइन और बजट के बारे में अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है ।

<u>तकनीकी सत्र-I (नए शोध प्रस्ताव):</u>

इस सत्र की शुरुआत में ही अध्यक्ष ने सभी वैज्ञानिकों को निर्धारित समय सीमा के भीतर नए शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया तथा सभी आरएजी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे शोध प्रस्तावों में और सुधार के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव दें। इस सत्र में डॉ. पवन कुमार, डॉ. पीताम्बर सिंह नेगी, डॉ. स्वर्ण लता, डॉ. मोहम्मद इब्राहिम, डॉ. बालकृष्ण तिवारी एवं डॉ॰ रणजीत कुमार द्वारा कुल छह (06) नए शोध प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए। प्रस्तुतियों के बाद प्रत्येक परियोजना के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत और गहन चर्चा की गई। परियोजनावार समीक्षा निम्नानुसार संकलित की गई है:-

परियोजना 1: "भारतीय हिमालय के शीत मरुस्थलों में पॉपलर पर हमला करने वाले कीटों की गतिशीलता की वर्तमान स्थिति की निगरानी करना और गंभीर कीटों के विरूद्ध प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों का विकास करना"।

डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-एफ. एवं प्रधान अन्वेषक ने परियोजना पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी तथा परियोजना के उद्देश्यों, कार्यप्रणाली, वार्षिक कार्य योजना, बजट एवं अपेक्षित परिणामों के बारे में विस्तार से बताया। प्रस्तुति के बाद चर्चा हुई तथा परियोजना के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आरएजी सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे गए।

डॉ. एस.पी. भारद्वाज, सेवानिवृत्त कुलपति, एपीजी विश्वविद्यालय ने परियोजना का शीर्षक भारतीय हिमालय से बदलकर उत्तर पश्चिमी हिमालय करने का सुझाव दिया। उन्होंने अध्ययन में माइट्स, डेफोलिटर्स, बीटल आदि की घटनाओं को भी शामिल करने का सुझाव दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उद्देश्यों/कार्य-प्रणाली को पूरा करने के लिए वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण होना चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि टैक्सोनोमिक अध्ययनों की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि अतीत में बहुत कार्य पहले ही हो चुके है। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि सभी प्रासंगिक सुझावों को अंतिम प्रस्ताव में शामिल किया जाएगा।

डॉ. अवतार कौर, वैज्ञानिक-एफ, प्रभारी अधिकारी, जेडएसआई-हाई एल्टीट्यूड रीजनल सेंटर, सोलन ने बताया कि अन्य संगठनों से वैज्ञानिकों को जोड़ने से पहले सक्षम अधिकारी से उचित अनुमति लेनी चाहिए। इसके जवाब में, **डॉ. पी.एस. रावत, एडीजी (आरपी)** ने निदेशक और प्रधान अन्वेषक को जेडएसआई को निरंतर के अंतर्गत पत्र लिखने का निर्देश दिया। जवाब में, प्रधान अन्वेषक ने कहा कि इस बारे में पहले ही पत्र भेजा जा चुका है, लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है और अगर कोई जवाब नहीं मिलता है तो डॉ. पी.सी. पठानिया, वैज्ञानिक-ई, जेडएसआई-एचएआरसी, सोलन, हिमाचल प्रदेश को अंतिम प्रस्ताव तैयार करते समय परियोजना में सह-प्रधान अन्वेषक से हटा दिया जाएगा।

डॉ. कमल किशोर सूद, प्रोफेसर, सिल्वीकल्चर और एग्रोफॉरेस्ट्री विभाग, बागवानी और वानिकी महाविद्यालय, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू ने सुझाव दिया कि कीटों की गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए उनकी जनसंख्या को शामिल किया जाए एवं सांख्यिकीविद् की सहायता ली जाए।

डॉ. पी.एस. रावत, एडीजी (आरपी) ने कहा कि परियोजना के आउटपुट में संख्या को मापने की आवश्यकता नहीं है। **डॉ. सी.एल. ठाकुर, डीन, वानिकी महाविद्यालय, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन** ने गंभीर कीटों के खिलाफ प्रभावी प्रबंधन के लिए जैविक कीटनाशकों के उपयोग का सुझाव दिया।

डॉ. सुरेश अत्री, संयुक्त सदस्य सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, शिमला ने पॉपलर प्रजातियों के लिए लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन रणनीति का सुझाव दिया। उन्होंने यह भी कहा कि परियोजना को पॉपलर प्रजातियों के लिए जलवायु परिवर्तन से संबंधित एकीकृत कीट प्रबंधन रणनीति की सिफारिश करनी चाहिए।

डॉ. डी.पी. वालिया, प्रमुख एवं प्रधान वैज्ञानिक आईसीएआर-आईएआरआई क्षेत्रीय स्टेशन, फागली, शिमला ने आई.पी.एम. से संबंधित पूर्व में पूर्ण हो चुकी परियोजनाओं के निष्कर्षों को प्रकाशित करने का सुझाव दिया।

अंत में, आरएजी सदस्यों ने सुझाए गए परियोजना संशोधनों के बाद इस परियोजना को आरपीसी को प्रस्तुत करने की सिफारिश की।

परियोजना 2: "हिमाचल प्रदेश में प्रूनस मीरा कोहने (जंगली आड़ू/बेहमी) से मूल्यवर्धित उत्पादों का पारिस्थितिक मूल्यांकन, मानचित्रण, पुनर्स्थापन और विकास"।

डॉ. स्वर्ण लता, वैज्ञानिक-डी. एवं प्रधान अन्वेषक ने परियोजना पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी तथा प्रस्ताव की आवश्यकता, समीक्षा किए गए साहित्य, उद्देश्य, कार्यप्रणाली, कार्ययोजना, बजट तथा परियोजना के अनुमानित परिणाम के बारे में विस्तार से बताया। प्रस्तुति के बाद, चर्चा हुई तथा परियोजना के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आरएजी सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे गए:-

श्रीमती दीप शिखा, भा.व.से. ने परियोजना में गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री (क्यूपीएम) जुटाने की अनुवर्ती योजना के बारे में पूछा। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि इसे दूसरे चरण यानी नई परियोजना में शामिल किया जाएगा। श्रीमती दीप शिखा ने चार साल की परियोजना अवधि में मूल्य संवर्धन एवं रोड मैप के बारे में प्रश्न उठाया ।

डॉ. सुशील कुमार कापटा, भा.व.से., एपीसीसीएफ-वित्त (सेवानिवृत्त), हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग ने बाजार में मूल्य संवर्धित उत्पादों की उपलब्धता के बारे में पूछा। उन्होंने उद्देश्यों/ कार्य-प्रणाली को कम करने का भी सुझाव दिया।

डॉ. सी एल ठाकुर, डीन, वानिकी महाविद्यालय, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन ने मूल्य संवर्धित उत्पादों के व्यावसायीकरण और उनके प्रमाणीकरण की आवश्यकता के बारे में प्रश्न उठाया, जो कि बहुत लंबी प्रक्रिया है। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि मूल्य संवर्धन भाग को सह-प्रधान अन्वेषक, **डॉ. सरला शाशनी,** वैज्ञानिक ई, जीबीपी-एनआईएचई एचआरसी द्वारा किया जाएगा।

डॉ. डी.पी. शर्मा, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), यूएचएफ नौनी, ने गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री (क्यूपीएम) उगाने के लिए अपनाए जाने वाले मानदंडों के बारे में पूछा। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री (क्यूपीएम) उगाने के लिए नर्सरी विकास मापदंडों का अध्ययन किया जाएगा।

डॉ. लाल सिंह, निदेशक, हिमालयन रिसर्च ग्रुप (एचआरजी) ने सुझाव दिया कि क्यूपीएम बढ़ाने के लिए बेहतर पेड़ों/प्लस पेड़ों की पहचान की जानी चाहिए। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री (क्यूपीएम) उगाते समय इसका ध्यान रखा जाएगा।

डॉ. मोहर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, आईसीएआर-एनबीपीजीआर, क्षेत्रीय स्टेशन, फागली, शिमला ने सुझाव दिया कि पहले क्यूपीएम के लिए टीएसएस आदि जैसे बेंचमार्क मानदंड तय किए जाएं। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि अंतिम परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करने के दौरान इसका ध्यान रखा जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि इस हिस्से को सह-प्रधान अन्वेषक, **डॉ. सरला शाशनी, वैज्ञानिक ई**, जीबीपी-एनआईएचई एचआरसी द्वारा किया जाएगा।

डॉ. सुरेश अत्री, संयुक्त सदस्य सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, शिमला ने सुझाव दिया कि परियोजना शीर्षक में उल्लिखित विभिन्न विषयों में से किसी एक विशेष विषय पर ध्यान केन्द्रित किया जाए।

डॉ. पी.एस. रावत, सहायक महानिदेशक (आरपी) ने साझेदार संगठनों के बीच गतिविधियों के दोहराव के बारे में टिप्पणी की। उन्होंने यह भी बताया कि उद्देश्य परियोजना के शीर्षक से मेल खाना चाहिए। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि अंतिम परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय इसका ध्यान रखा जाएगा। **डॉ. एस.पी. भारद्वाज** ने पूछा कि हिमाचल प्रदेश में जंगली आड़ू/बेहमी का कितना क्षेत्र है और क्या इसके लिए कोई रिपोर्ट उपलब्ध है।

अंत में, आरएजी सदस्यों ने सुझाए गए परियोजना संशोधनों के बाद इस परियोजना को आरपीसी को प्रस्तुत करने की सिफारिश की।

परियोजना 3: "गुणवत्तापूर्ण पौध स्टॉक बढ़ाने और हिमाचल प्रदेश में संरक्षण के लिए जर्मप्लाज्म बैंक की स्थापना के लिए ओरोक्सिलम इंडिकम (एल.) कुर्ज़ के बीज स्रोतों का सर्वेक्षण और मूल्यांकन"

श्री पी.एस. नेगी, वैज्ञानिक-डी एवं प्रधान अन्वेषक ने परियोजना पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी तथा परियोजना के उद्देश्यों, कार्यप्रणाली, कार्ययोजना, बजट एवं अनुमानित परिणामों के बारे में विस्तार से बताया। प्रस्तुति के बाद चर्चा हुई तथा परियोजना के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आरएजी सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे गए:-

डॉ. सुरेश अत्री ने इस प्रजाति की पारिस्थितिकी प्रासंगिकता के बारे में प्रश्न उठाया और बताया कि यह प्रजाति गंभीर रूप से संकटग्रस्त श्रेणी में नहीं है। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि इस प्रजाति के बीजों का किन्नौर में सामाजिक खासकर त्योहारों पर महत्व है।

डॉ. डी.पी. वालिया ने सुझाव दिया कि शीर्षक में प्रजाति का सामान्य नाम शामिल किया जाना चाहिए ताकि आम आदमी को प्रजाति के बारे में समझने में आसानी हो। उन्होंने प्रजाति के व्यावसायिक महत्व के बारे में भी सवाल उठाया और पूछा कि क्या परियोजना प्रस्ताव तैयार करते समय औषधीय गुणों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए दवा कंपनियों से संपर्क किया गया है या नहीं। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि इस प्रजाति के बीज किन्नौर में

विशेष रूप से त्योहारों में सामाजिक महत्व रखते हैं और दवा कंपनियों से संपर्क नहीं किया गया है।

श्री आर.एल. सांगा, **एपीसीसीएफ, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण विंग, हिमाचल प्रदेश वन अकादमी, हिमाचल प्रदेश वन विभाग, करनोडी, सुंदर नगर** ने बताया कि इस प्रजाति के पौधे सुन्दरनगर स्थित वन नर्सरी में उगाए जा रहे हैं। उन्होंने प्रधान अन्वेषक को उस वन नर्सरी का दौरा करने का सुझाव दिया।

डॉ. एस.पी. भारद्वाज ने उद्देश्यों को कम करने का सुझाव दिया।

श्री बी.एम. शर्मा ने जम्मू क्षेत्र में इस प्रजाति के महत्व तथा शीत मरुस्थल विशेषकर लद्दाख में इस प्रजाति के सांस्कृतिक उपयोग पर प्रकाश डाला।

डॉ. एच.एस. बन्याल, अध्यक्ष, बायोसाइंस विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला ने पूछा कि इस प्रजाति के संरक्षण से जैव विविधता संरक्षण में किस प्रकार सुधार होगा। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने बताया कि यह प्रजाति बहुत कम संख्या में है, इसलिए इसके संरक्षण से जैव विविधता संरक्षण में सुधार होगा।

डॉ. पी.एस. रावत, एडीजी (आरपी) ने बताया कि यह पौधा दवा कंपनियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि परियोजना में दर्शाया गया बजट बहुत अधिक है और बजट को कम करने का सुझाव दिया। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि अंतिम परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करते समय इस बात का ध्यान रखा जाएगा।

अंत में, आरएजी सदस्यों ने सुझाए गए परियोजना संशोधनों के बाद इस परियोजना को आरपीसी को प्रस्तुत करने की सिफारिश की।

परियोजना 4: "आनुवंशिक सुधार और सिल्वी- पेस्टोरल प्रणाली के विकास के माध्यम से हिमालय (लद्दाख) के शीत मरुस्थल क्षेत्र में चारे की मांग में वृद्धि"।

डॉ. मोहम्मद इब्राहिम, वैज्ञानिक-ई एवं प्रधान अन्वेषक ने परियोजना पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी तथा उद्देश्यों, कार्यप्रणाली, समय-सारिणी एवं बजट के बारे में विस्तार से बताया। प्रस्तुति के बाद, चर्चा हुई तथा परियोजना के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आरएजी सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे गए:-

डॉ. सी एल ठाकुर ने परियोजना के शीर्षक में ***"मांग"*** शब्द की जगह ***"आपूर्ति"*** शब्द रखने का सुझाव दिया। उन्होंने बजट को कम करके केवल दो से तीन प्रजातियों तक सीमित रखने का भी सुझाव दिया।

डॉ. पी.एस. रावत, एडीजी (आरपी) ने कहा कि परियोजना में दर्शाया गया बजट बहुत अधिक है तथा उन्होंने बजट को कम करने का सुझाव दिया।

डॉ. एस. पी. भारद्वाज ने जेरोफाइटिक और मेसोफाइटिक प्रजातियों को परियोजना में शामिल करने पर प्रकाश डाला।

श्री बी.एम. शर्मा ने परियोजना की अवधि कम करने, **पोएसी परिवार** एवं वार्षिक और द्विवार्षिक पौधों को ही परियोजना में **शामिल करने** का सुझाव दिया। उन्होंने यह भी बताया कि परियोजना में उल्लिखित बाड़ लगाने की अनुशंसा नहीं की जा सकती है।

डॉ. डी. पी. वालिया ने आईसीएफआरई-एचएफआरआई द्वारा सैलिक्स पर किए गए पूर्व शोधों के परिणामों में चयनित उन्नत क्लोनों को इस परियोजना मे शामिल करने का सुझाव दिया।

अंत में, आरएजी सदस्यों ने सुझाए गए परियोजना संशोधनों के बाद इस परियोजना को आरपीसी को प्रस्तुत करने की सिफारिश की।

परियोजना 5: "भारत के शीत मरुस्थल क्षेत्रों में सैलिक्स प्रजातियों का वितरण मानचित्रण, आणविक लक्षण वर्णन और सूखा सहिष्णुता मूल्यांकन"

डॉ. बालकृष्ण तिवारी, वैज्ञानिक-सी एवं प्रधान अन्वेषक ने परियोजना पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी तथा समस्या विवरण, समीक्षा किए गए साहित्य, उद्देश्य, कार्यप्रणाली, कार्य योजना, बजट तथा परियोजना के अपेक्षित परिणामों के बारे में विस्तार से बताया। प्रस्तुति के बाद, चर्चा हुई तथा परियोजना के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आरएजी सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे गए:-

डॉ. एच.एस. बन्याल ने बार कोडिंग के बारे में पूछा, जवाब में प्रधान अन्वेषक ने बताया कि सेलिक्स की प्रजाति के पौधों की पहचान करना बहुत कठिन है इसलिए पौधों की पहचान के लिए आणविक प्रक्रिया की आवश्यकता है।

डॉ. एस.पी. भारद्वाज एवं डॉ. पी.एस. रावत, एडीजी (आरपी) ने परियोजना के शीर्षक में "भारत के पूरे शीत मरुस्थल" को "उत्तर पश्चिमी/ट्रांस-हिमालय के शीत मरुस्थल" से बदलने का एवं बजट कम करने का सुझाव दिया।

डॉ. डी. पी. वालिया ने प्रधान अन्वेषक को डॉ. मोहम्मद इब्राहिम के साथ मिलकर उनके प्रोजेक्ट में बताए गए समान उद्देश्यों पर काम करने का सुझाव दिया।

अंत में, आरएजी सदस्यों ने सुझाए गए परियोजना संशोधनों के बाद इस परियोजना को आरपीसी को प्रस्तुत करने की सिफारिश की।

परियोजना 6: "संरक्षण रणनीतियों के विकास के लिए सैंज खड्ड वाटरशेड, शिमला, उत्तर-पश्चिमी हिमालय में पुष्प विविधता का आकलन"।

डॉ. रंजीत कुमार, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रधान अन्वेषक ने परियोजना के शोध विषय, समीक्षा किए गए साहित्य, उद्देश्यों, शोध विधियों, कार्य योजना, बजट और अनुमानित परिणामों/आउटपुट के बारे में विस्तार से बताया उसके उपरांत परियोजना के विभिन्न पहलुओं से संबंधित आरएजी सदस्यों द्वारा प्रश्न पूछे गए:-

डॉ. एच.एस. बन्याल ने बताया कि अध्ययन क्षेत्र के पौधों की लोक जैव-विविधता रजिस्टर में पहले ही पहचान की जा चुकी है। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि इस परियोजना में सूची तैयार की जाएगी।

डॉ. सुशील कुमार कापटा ने वनों के क्षरण के बारे में वन विभाग से डाटा लेने व जमीनी सच्चाई (ground truthing) के बारे में पूछा। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि डेटा एफएसआई से लिया गया है।

डॉ. एस.पी. भारद्वाज ने पिछले डेटा को वर्तमान डेटा से सह-संबंधित (Correlate) करने का एवं परियोजना में अन्य संस्थानों के योगदान का उल्लेख करने का सुझाव दिया। उन्होंने वृक्षारोपण के लाभों को भी निर्दिष्ट करने का सुझाव दिया।

डॉ. सुरेश अत्री ने परियोजना दोहराव से बचने का सुझाव दिया । जवाब में प्रधान अन्वेषक ने बताया कि पिछले काम का कोई विश्लेषण नहीं है।

डॉ. कमल किशोर सूद ने अध्ययन में किए जाने वाले मृदा मापदंडों के बारे में पूछा। जवाब में प्रधान अन्वेषक ने कहा कि पीएच, ओसी आदि का विश्लेषण किया जाएगा। डॉ. सूद ने नमूने लेने के लिए मृदा की गहराई बढ़ाने का भी सुझाव दिया।

डॉ. सी.एल. ठाकुर ने बताया कि शीर्षक उद्देश्यों को प्रतिबिंबित नहीं कर रहा है। उन्होंने मृदा गहराई को प्राकृतिक पुनर्जनन के साथ सहसंबंधित करने का भी सुझाव दिया।

डॉ. पी.एस. रावत, एडीजी (आरपी) ने परियोजना की अवधि और बजट को कम करने का सुझाव दिया। इस पर प्रधान अन्वेषक ने जवाब देते हुए कहा कि अंतिम परियोजना प्रस्ताव तैयार करते समय सुझावों को शामिल किया जाएगा।

अंत में, आरएजी सदस्यों ने सुझाए गए परियोजना संशोधनों के बाद इस परियोजना को आरपीसी को प्रस्तुत करने की सिफारिश की।

तकनीकी सत्र-II (चल रही अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति):

अनुसंधान सलाहकार बैठक के दूसरे तकनीकी सत्र में चल रही शोध परियोजनाओं की प्रगति प्रस्तुत की गई। जैसा कि डॉ. **आर.के. वर्मा** ने पहले अपने प्रस्तुतीकरण में संस्थान की सभी चल रही परियोजनाओं की संक्षिप्त प्रगति प्रस्तुत की थी, इसलिए आरएजी के सभी सदस्यों ने चल रही परियोजनाओं की प्रगति को संतोषजनक पाया और उन्हें जारी रखने की सिफारिश की।

तकनीकी सत्रों के समापन के बाद, **डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक (प्रभारी) और अध्यक्ष** ने एडीजी (आरपी) को आरएजी बैठक के दौरान प्रस्तुत विभिन्न शोध प्रस्तावों के संबंध में बहुमूल्य सुझाव देने के लिए आमंत्रित किया। **डॉ. पी.एस. रावत, एडीजी (अनुसंधान योजना)** ने सम्मानित सदस्यों के प्रति सम्मान व्यक्त किया और बहुमूल्य सुझाव देने के लिए आरएजी के सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया। उन्होंने प्रधान अन्वेषकों को विशेषज्ञ सदस्यों की टिप्पणियों/इनपुट के अनुसार सुझाए गए संरचनात्मक परिवर्तन करने और अपने परियोजना प्रस्तावों को संशोधित करने की सलाह दी। उन्होंने प्रधान अन्वेषकों से कहा कि वे आईसीएफआरई, मुख्यालय में **अनुसंधान नीति समिति** को प्रस्तुत करने से पहले आरएजी सदस्यों की सभी सिफारिशों को संबंधित परियोजनाओं में शामिल करें।

बैठक के अंत में, **डॉ. जगदीश सिंह विज्ञान-जी.** ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उन्होंने एचएफआरआई के नए शोध प्रस्तावों का मूल्यांकन करने के लिए अपना बहुमूल्य समय देने के लिए आईसीएफआरई के **एडीजी (आरपी), डॉ. पीएस रावत और माननीय आरएजी सदस्यों** के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने आरएजी बैठक के आयोजन के लिए श्रमसाध्य प्रयास करने के लिए **निदेशक (प्रभारी) डॉ. संदीप शर्मा** को भी धन्यवाद दिया। उन्होंने **प्रो. (सेवानिवृत्त) एसडी भारद्वाज, पूर्व डीन कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री, विश्वविदयालय, नौणी** को प्रत्येक परियोजना का बहुत ही आलोचनात्मक मूल्यांकन करने, प्रमुख खामियों को इंगित करने और संशोधन के लिए बहुमूल्य टिप्पणियों का सुझाव देने के लिए हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने **डॉ. सुशील कुमार कापटा, भा.व.से., एपीसीसीएफ-वित्त (सेवानिवृत्त), हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग, श्री आर.एल. सांगा, भा.व.से., ए.पी.सी.सी.एफ., अनुसंधान एवं प्रशिक्षण विंग, हिमाचल प्रदेश वन अकादमी**, **डॉ. सुरेश सी. अत्री, संयुक्त सदस्य सचिव**, हिमकोस्ट, **श्री बी.एम. शर्मा, आईएफएस अतिरिक्त मुख्य वन संरक्षक और मुख्य वन्यजीव वार्डन**

लद्दाख वन विभाग, **डॉ. संजीव ठाकुर सेवानिवृत्त डीन,** वानिकी महाविद्यालय, यूएचएफ नौनी, **डॉ. हरिंदर सिंह बन्याल अध्यक्ष**, जैव विज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, **डॉ. सी.एल. ठाकुर डीन,** वानिकी महाविद्यालय, बागवानी और वानिकी विश्वविद्यालय, नौनी, **डॉ. मोहर सिंह ठाकुर, प्रधान** वैज्ञानिक और प्रमुख, आईसीएआर-एनबीपीजीआर का भी धन्यवाद किया। उन्होंने **डॉ. धर्म पाल वालिया, प्रमुख और प्रधान वैज्ञानिक**, आईसीएआर-आईएआरआई, **डॉ. डी.पी. शर्मा, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त),** यूएचएफ नौनी, प्रो**. (डॉ.) के.के. सूद, प्रोफेसर,** सिल्विकल्चर और एग्रोफोरेस्ट्री विभाग एवं कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री, SKUAST, जम्मू, **डॉ. लाल सिंह, निदेशक,** हिमालयन रिसर्च ग्रुप **(HRG)**, **डॉ. अवतार कौर सिद्धू, वैज्ञानिक-एफ,** प्रभारी अधिकारी, ZSI-हाई एल्टीट्यूड रीजनल सेंटर, **श्री सुरेश कुमार जगोता, प्रोपराइटर,** कथा और कच्छ इंडस्ट्री, **श्री सुधीर सूद, प्रोपराइटर** रेजिन और टर्पिन, सोलन, श्री **प्रभु दयाल शर्मा, कार्यकारी निदेशक,** पर्वतीय जन शिक्षा एवं विकास संगठन, सिरमौर को आर॰ए॰जी॰ मीटिंग के दौरान उनके बहुमूल्य सुझावों और इनपुट के लिए धन्यवाद दिया। अंत में, उन्होंने बैठक के सफलतम आयोजन के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल सभी समिति सदस्यों को उनके प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया।

अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक की कुछ झलकियां

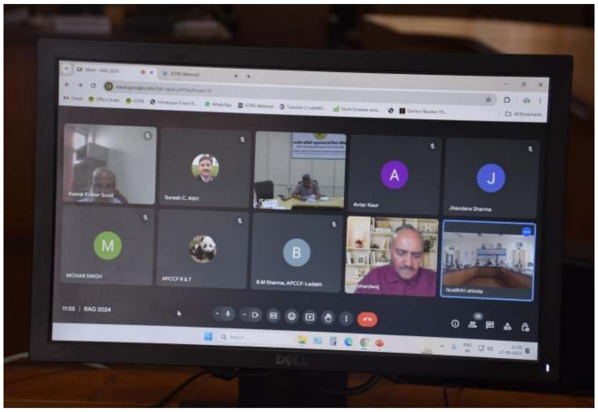

XXV Research Advisory Group (RAG) Meeting

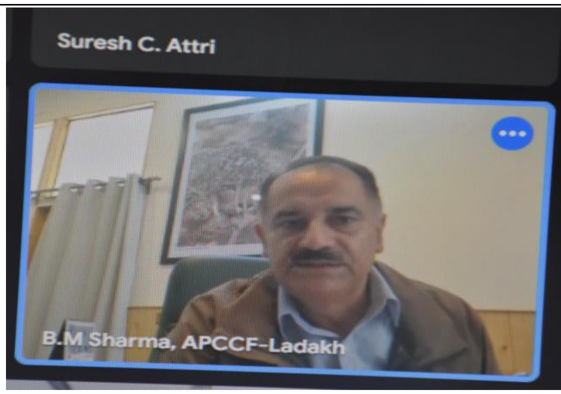
Suresh C. Attri
B.M Sharma, APCCF-Ladakh

013, Himachal Pradesh
Sh. R. L. Sanga, IFS

Dr. Sushil Kumar Kapta, IFS

Dr. C.L. Thakur

Dr. Lal Singh

Dr. Harinder Singh Banyal

Avtar Kaur

****